Adda247
GET IT ON Google Play

LT राजकीय सहायक अध्यापक परीक्षा, 2018
संस्कृतम्
व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

1. 'अब्राह्मणः' इति समस्तपदे समासोऽस्ति-
(a) अव्ययीभावः (b) नञ् - तत्पुरुषः
(c) द्विगुः (d) कर्मधारयः

Ans. (b) : 'अब्राह्मणः' इस समस्त पद में नञ्-तत्पुरुष समास है। इसका लौकिक विग्रह = न ब्राह्मणः होगा। नञ् समास, तत्पुरुष समास का ही एक भेद होता है।

2. 'तल्लीनः' इत्यस्मिन् सन्धिः क्रियते-
(a) 'हलि च' सूत्रेण
(b) 'यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा' सूत्रेण
(c) 'तोर्लि' सूत्रेण
(d) 'अनचि च' सूत्रेण

Ans. (c) : तल्लीनः में सन्धि कार्य 'तोर्लि' सूत्र से किया गया है। तल्लीनः का सन्धि-विच्छेद 'तत् + लीनः' होगा। तोर्लि सुत्रानुसार त वर्ग को पर सवर्ण हो जाता है अर्थात् त वर्ग के बाद यदि ल हो तो त वर्ग को परसवर्ण आदेश हो जाता है।
जैसे- तत् + लीनः = तल्लीनः
विद्वान् + लिखति = विद्वाल्ँलिखति/विद्वाल्लिँखति

3. 'बलिं याचते वसुधाम्' इत्यत्र कस्य कारकस्य अविवक्षा?
(a) सम्प्रदानस्य (b) अपादानस्य
(c) कर्मणः (d) करणस्य

Ans. (b) : 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य में अपादान कारक की अविवक्षा है। क्योंकि 'अकथितञ्च' सूत्र के अनुसार अपादानादि कारकों की अविवक्षा होने पर ही कर्म कारक होगा। यदि कर्त्ता को 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य में अपादान की अविवक्षा नहीं होगी तो वाक्य होगा-बलेः याचते वसुधाम् ।।

4. 'चक्रेण युगपत्- सचक्रम्' इत्यत्र समासो भवति-
(a) तृतीयातत्पुरुषः
(b) गतितत्पुरुषः
(c) केवलसमासः
(d) अव्ययीभावः

Ans. (d) : चक्रेण युगपत्-सचक्रम् इस उदाहरण में अव्ययीभाव समास है। सचक्रम् का लौकिक विग्रह चक्रेण युगपद् एवं अलौकिक विग्रह 'चक्र टा युगपद् सु' होगा।

5. 'कुपुरुषः' इत्यत्र समासो भवति-
(a) अव्ययीभावः
(b) प्रादि तत्पुरुषः
(c) उपमानपूर्वपदकर्मधारयः
(d) बहुव्रीहिः

Ans. (b) : 'कुपुरुषः' में प्रादि तत्पुरुष समास है। कुपुरुषः का विग्रह कुत्सितः पुरुषः इति कुपुरुषः होगा। प्रादि तत्पुरुष समास तत्पुरुष समास का ही भेद है। कुपुरुषः में 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास हुआ है।

6. 'विद्वान् + लिखति' इत्यत्र सन्धिरूपं भवति-
(a) विद्वाल्लिखति (b) विद्वांल्लिखति
(c) विद्वाल्ँलिखति (d) विद्वाद्लिखति

Ans. (c) : 'विद्वान् + लिखति' का सन्धि रूप विद्वाल्ँलिखति होगा। विद्वाल्ँलिखति में सन्धि कार्य 'तोर्लि' सूत्र से किया गया है।

7. 'मनोरथः' इति पदे सन्धिविच्छेदो भवति-
(a) मनः + रथः (b) मनस् + रथः
(c) मनर् + रथः (d) मनरु + रथः

Ans. (b) : मनोरथः का सन्धि विच्छेद मनस् + रथः होगा। मनस् + रथः में 'ससजुषोरुः' सूत्र से मन रु + रथः हुआ। 'हशि च' सूत्र से रु को उ होकर मन उ + रथः हुआ। 'आद्गुणः' सूत्र से गुण होकर मनोरथः पद सिद्ध हुआ।

8. 'विश्वपा'- शब्दस्य द्वितीयाविभक्तिबहुवचने रूपं भवति-
(a) विश्वपान् (b) विश्वपीन्
(c) विश्वपाः (d) विश्वपः

Ans. (d) : 'विश्वपा' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप 'विश्वपः' होगा। विश्वपा का सभी विभक्ति वचन में रूप इस प्रकार है-

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः!	हे विश्वपौ!	हे विश्वपाः!

9. 'पाचकः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति-
(a) ण्वुल् (b) अण्
(c) वुञ् (d) अच्

Ans. (a) : 'पाचकः' में ण्वुल् प्रत्यय है। पच् धातु से ण्वुल् हुआ। ण्वुल् में वु बचा पच् +वु हुआ। वु को 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अक' होकर पच् + अक हुआ। 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि स्वर की वृद्धि होकर पाच् + अक हुआ। वर्ण सम्मेलन करने पर पाचक बना। पद बनाने के लिए सु प्रत्यय लगायेंगे। अनुबन्ध लोप एवं रुत्व विसर्ग होकर पाचकः बना।

Adda247

Test Prime

ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

80,000+ Mock Tests

Personalised Report Card

Unlimited Re-Attempt

600+ Exam Covered

20,000+ Previous Year Papers

500% Refund

ATTEMPT FREE MOCK NOW

Adda247
GET IT ON Google Play

10. 'अट्ठासी' इति हिन्दीभाषायाः सङ्ख्या संस्कृते भवति-

(a) अष्टशीतिः

(b) अष्टानवतिः

(c) अष्टाशीतिः

(d) अष्टाशी

Ans. (c) : 'अट्ठासी' का संस्कृत रूप अष्टाशीतिः होगा।

11. 'आभया पत्रं लिख्यते' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं भवति-

(a) आभा पत्रं लिखति

(b) आभया पत्रं लेखिष्यते

(c) आभा पत्रस्य लेखनं कुर्वते

(d) आभया पत्रं लेलिख्यते

Ans. (a) : 'आभया पत्रं लिख्यते' इस वाक्य का वाच्यपरिवर्तन करने पर आभा पत्रं लिखति होगा।
कर्तृवाच्य= कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया क्रिया कर्त्ता के अनुसार।
कर्मवाच्य= कर्ता में तृतीया विभक्ति कर्म में प्रथमा तथा क्रिया कर्म के लिङ्ग एवं वचन के अनुसार।

12. 'अहं भोजनं पचामि' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं भवति-

(a) अहं भोजनं पच्यते।

(b) मया भोजनं पच्यते।

(c) अहं भोजनस्य पाचनं करोमि।

(d) मया भोजनं पच्मि।

Ans. (b) : 'अहं भोजनं पचामि' इस वाक्य का वाच्य परिवर्तन 'मया भोजनं पच्यते' होगा।

13. अधोलिखितेषु शुद्धं वाक्यं वर्तते-

(a) रामः गृहाय गच्छति।

(b) अहं मोहनस्य सह गमिष्यामि।

(c) सीता रामेण सार्धं गतवती।

(d) कृष्णः राधया स्निह्यति।

Ans. (c) : दिये गए विकल्पों में से कारक की दृष्टि से शुद्ध वाक्य 'सीता रामेण सार्धं गतवती' होगा। सहयुक्तेऽप्रधाने सूत्र के अनुसार सह के योग में अप्रधान कारक से तृतीया विभक्ति होती है। इसी प्रकार साकम्, सार्धं, समम् इनके योग में भी तृतीया विभक्ति समझनी चाहिए।

14. 'पठ् + अनीयर्' इत्यनेन रूपं भवति-

(a) पठ्यनीयम्　(b) पठनीयर्

(c) पठनीयम्　(d) पठानीयः

Ans. (c) : पठ् धातु से अनीयर् प्रत्यय लगाने पर पठनीयम् बनता है। पठ् + अनीयर् = पठनीयम् क्योंकि अनीयर् में अनीय शेष बचता है अनीयर् प्रत्यय 'के लिए' अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

15. 'सक्थि' इति शब्दस्य प्रथमाबहुवचने रूपमस्ति-

(a) सक्थिनि　(b) सक्थने

(c) सक्थीनि　(d) सक्थिनः

Ans. (c) : 'सक्थि' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप 'सक्थीनि' होगा। इसके सभी रूप इस प्रकार है -

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सक्थि	सक्थिनी	सक्थीनि
द्वितीया	सक्थि	सक्थिनी	सक्थीनि
तृतीया	सक्थिना	सक्थिभ्याम्	सक्थिभिः
चतुर्थी	सक्थिने	सक्थिभ्याम्	सक्थिभ्यः
पञ्चमी	सक्थिनः	सक्थिभ्याम्	सक्थिभ्यः
षष्ठी	सक्थिनः	सक्थिनोः	सक्थीनाम्
सप्तमी	सक्थिनि	सक्थिनोः	सक्थिषु
सम्बोधन	हे सक्थि!	हे सक्थिनी!	हे सक्थीनि!

16. ''अहं चतुरः बालकान् पश्यामि'' इति वाक्ये 'चतुरः' इति पदमस्ति-

(a) द्वितीया-बहुवचने

(b) प्रथमा-एकवचने

(c) प्रथमा-बहुवचने

(d) षष्ठी-एकवचने

Ans. (a) : अहं चतुरः बालकान् पश्यामि' इस वाक्य में 'चतुरः' पद में द्वितीया बहुवचन का प्रयोग किया गया है। चतुर् शब्द रूप तीनों लिङ्गों तथा बहुवचन में चलते हैं।

	पुं०	स्त्री०	नपु०
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्/चतुण्णार्म्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्/चतुण्णार्म्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

17. 'पठयित्वा इत्यस्य शुद्धं रूपं भवति-

(a) पठ्त्वा　(b) पाठ्त्वा

(c) पठित्वा　(d) पाठयित्वा

Ans. (d) : पठयित्वा शुद्धं रूपं पाठयित्वा भवति।

18. 'श्री' शब्दस्य 'श्रियाम्' इति रूप भवति-

(a) केवलं षष्ठी-बहुवचने

(b) केवलं सप्तमी-एकवचने

(c) षष्ठी-बहुवचने सप्तमी-एकवचने च

(d) द्वितीया-एकवचने

Ans. (c) : श्री शब्द के 'श्रियाम्' यह रूप षष्ठी बहुवचन एवं सप्तमी एकवचन में बनता है। श्री शब्द के सम्पूर्ण रूप इस प्रकार है–

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रिये/श्रियै	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियः/श्रियाः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियः/श्रियाः	श्रियोः	श्रीणाम् /श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम् /श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः!	हे श्रियौ!	हे श्रियः!

19. 'मोक्षे इच्छास्ति' इत्यत्र 'मोक्षे' इति पदे आधारोऽस्ति-

(a) वैषयिकः (b) औपश्लेषिकः
(c) अभिव्यापकः (d) एषु न कोऽपि

Ans. (a) : 'मोक्षे इच्छास्ति' इस उदाहरण में 'मोक्षे' पद में वैषयिक आधार है। आधार तीन प्रकार के होते हैं। (1) औपश्लेषिक आधार (2) वैषयिक आधार (3) अभिव्यापक आधार अर्थात् जिस आधार का आधेय के साथ बौद्धिक संश्लेष होता है उसे वैषयिक आधार कहते हैं। जैसे -मोक्षे इच्छास्ति अर्थात् मोक्ष विषयक इच्छा।

20. 'उनतालीस' इति हिन्दी सङ्ख्यायाः संस्कृते रूपं भवति-

(a) एकोनत्रिंशत् (b) एकोनचत्वारिंशत्
(c) नवविंशतिः (d) एकचत्वारिंशत्

Ans. (b) : हिन्दी संख्या 'उनतालीस' का संस्कृत रूप 'एकोनचत्वारिंशत्' होगा। एकोनचत्वारिंशत् अर्थात् 40 में एक कम यानि 39। एकोनत्रिंशत् /नवविंशतिः = 29। एकचत्वारिंशत् = 41

21. एषु कः प्रत्ययः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च न प्रयुज्यते?

(a) क्तः (b) क्तवतुः
(c) तव्यत् (d) अनीयर्

Ans. (b) : दिये गये विकल्पों में से 'क्तवतु' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त नहीं होते हैं। क्योंकि 'क्तवतु' प्रत्यय केवल और केवल कर्तृवाच्य में ही प्रयुक्त होता है। जबकि 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग सदैव कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही होता हैं।

22. 'लभ्' -धातोः विधिलिङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-

(a) लभन्ताम् (b) लभेरन्
(c) लभेताम् (d) अलभन्त

Ans. (b) : लभ् धातु विधिलिङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप 'लभेरन्' होता है। लभ् धातु विधिलिङ् लकार के रूप इस प्रकार हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म.पु.	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ.पु.	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

23. 'कृ' - धातोः परस्मैपदे लोट्लकारे उत्तमपुरुष एकवचने रूपं भवति-

(a) कुर्याम् (b) करवाम
(c) करवै (d) करवाणि

Ans. (d) : 'कृ' धातु के परस्मैपद लोट्लकार उत्तमपुरुष के एकवचन में रूप 'करवाणि' होगा।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	करोतु/कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म.पु.	कुरु/कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ.पु.	करवाणि	करवाव	करवाम

24. 'ज्ञा'- धातोः परस्मैपदे लङ्लकारे प्रथमपुरुषे एकवचने रूपं भवति-

(a) अजानीत् (b) अज्ञासीत्
(c) अजानात् (d) अजानन्

Ans. (c) : 'ज्ञा' धातु (परस्मैपद) लङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन में रूप 'अजानात्' होता है- इसके रूप इस प्रकार चलते हैं–

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म.पु.	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ.पु.	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

25. 'गाङ्गः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति-

(a) अप् (b) अण्
(c) अच् (d) इञ्

Ans. (b) : 'गाङ्गः' पद में अण् प्रत्यय लगा है। 'गङ्ग' शब्द से 'शिवादिभ्योऽण्' सूत्र से अण् प्रत्यय लगकर गाङ्गः पद सिद्ध होता है।

26. 'हन्'- धातोः लट्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने रूपं भवति-

(a) घ्नन्ति (b) हन्ति
(c) हनन्ति (d) हनन्नि

Ans. (a) : हन् धातु लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप घ्नन्ति बनता है। हन् धातु के लट्लकार के सभी रूप इस प्रकार हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म.पु.	हंसि	हथः	हथ
उ.पु.	हन्मि	हन्वः	हन्मः

27. 'कृ'-धातो ण्वुल् प्रत्यये कृते रूपं भवति-

(a) करणम् (b) कर्ता
(c) कारकः (d) कुर्वन्

Ans. (c) : कृ धातु से ण्वुल् प्रत्यय करने पर कारकः पद सिद्ध होता है। कृ +ण्वुल्। ण्वुल् में वु शेष बचता है। 'वु' को 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अक' होकर कृ + अक बना 'अचोञ्णिति' सूत्र से आदि स्वर की वृद्धि एवं 'उरणरपरः' सूत्र से रपर करके कारक बना।

Adda247 GET IT ON Google Play

28. सङ्ख्यावाचक - 'शत'- शब्दस्य तृतीयैकवचने रूपं भवति-

(a) शत्या (b) शतद्वारेण
(c) शतकेन (d) शतेन

Ans. (d) : संख्यावाचक शत शब्द का तृतीया एकवचन में 'शतेन' रूप बनता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शतः	शतौ	शताः
द्वितीया	शतम्	शतौ	शतान्
तृतीया	शतेन	शताभ्याम्	शताभिः

29. 'रागः' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति-

(a) घञ् (b) कः
(c) अच् (d) अप्

Ans. (a) : 'रागः' पद में घञ् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। रञ्ज् + घञ् = रागः।

30. 'मध्वरिः' इत्यत्र सन्धिविधायकं सूत्रमस्ति-

(a) यणः प्रतिषेधो वाच्यः (b) वान्तो यि प्रत्यये
(c) अचोऽन्त्यादि टि (d) इको यणचि

Ans. (d) : मध्वरिः में सन्धि विधायक सूत्र 'इकोयणचि' है मध्वरिः का विच्छेद 'मधु + अरिः' होगा। मध्वरिः का अर्थ है-मधु नामक दैत्य का मर्दन करने वाले विष्णु।

31. वाल्मीकिरामायणे काण्डसङ्ख्या वर्तते-

(a) अष्ट (b) नव
(c) सप्त (d) दश

Ans. (c) : वाल्मीकि रामायण में 7 काण्ड हैं। सातों काण्डों के नाम इस प्रकार हैं- (1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड/लंकाकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड।

32. वाल्मीकि रामायणस्य षष्ठकाण्डस्य नामास्ति-

(a) अरण्यकाण्डम् (b) किष्किन्धाकाण्डम्
(c) उत्तरकाण्डम् (d) युद्धकाण्डम्

Ans. (d) : वाल्मीकि रामायण के षष्ठ (छठवें) काण्ड का नाम युद्धकाण्ड है। वाल्मीकि रामायण में सबसे बड़ा काण्ड बालकाण्ड एवं सबसे छोटा किष्किन्धाकाण्ड है।

33. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य सर्गाणां सङ्ख्याऽस्ति-

(a) अष्टादशः (b) पञ्चदशः
(c) विंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

Ans. (c) : महाकवि माघ प्रणीत 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। यह महाकाव्य बृहत्त्रयी का महत्त्वपूर्ण काव्यग्रन्थ है। इसके नायक भगवान् श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक चेदिनरेश शिशुपाल हैं। शिशुपाल का वध ही इस महाकाव्य का फल है।

34. 'विभूषणं मौनमपण्डितानाम्' इति सूक्तिरस्य-

(a) नीतिशतके (b) रामायणे
(c) कादम्बर्याम् (d) किरातार्जुनीये

Ans. (a) : 'विभूषणं मौनमपण्डितानाम्' यह सूक्ति नीतिशतकम् से सम्बन्धित है। 'नीतिशतकम्' भर्तृहरि प्रणीत मुक्तक काव्य है। इसमें कुल 11 पद्धतियाँ दी गई हैं।

35. 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति' इति सूक्तेः प्रणेताऽस्ति-

(a) व्यासः (b) कालिदासः
(c) भवभूतिः (d) भर्तृहरिः

Ans. (d) : 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति'इस सूक्ति के प्रणेता भर्तृहरि हैं। यह सूक्ति भर्तृहरि के मुक्तक काव्य ग्रन्थ 'नीतिशतकम्' के अर्थ पद्धति का है।

भर्तृहरि की तीन रचनाएँ हैं- (1) शृंगारशतक (2) नीतिशतक (3) वैराग्यशतक

36. महाभारते गीता वर्तते-

(a) भीष्मपर्वणि (b) शान्तिपर्वणि
(c) उद्योगपर्वणि (d) द्रोणपर्वणि

Ans. (a) : गीता महाभारत के भीष्मपर्व में कही गई है। गीता 18 अध्यायों में विभक्त है। श्रीमद्भगवद्गीता प्रस्थानत्रयी का ग्रन्थ है। भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा दिये गए उपदेशों का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता गीता में है।

37. 'श्रेयसि केन तृप्यते' इति सूक्तिरस्ति-

(a) नैषधीयचरिते (b) शिशुपालवधे
(c) किरातार्जुनीये (d) रघुवंशे

Ans. (b) : 'श्रेयसि केन तृप्यते' यह सूक्ति महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवधम् महाकाव्य से सम्बन्धित है। शिशुपालवधम् महाकाव्य 20 सर्गों में विभक्त बृहत्त्रयी का महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ है। इसके नायक श्रीकृष्ण एवं प्रतिनायक चेदिनरेश शिशुपाल हैं।

38. काव्यविधासु कादम्बरी प्रोच्यते-

(a) आख्यायिका (b) चम्पूः
(c) उपन्यासः (d) कथा

Ans. (d) : काव्य विधाओं में कादम्बरी को कथा के अन्तर्गत परिगणित किया गया है। जबकि बाण प्रणीत हर्षचरितम् आख्यायिका के अन्तर्गत आती है। कथा कवि कल्पित होती है जबकि आख्यायिका ऐतिहासिक होती है।

39. 'दीपशिखा' इत्यनेन उपाधिना ज्ञायते-

(a) माघः (b) कालिदासः
(c) भारविः (d) श्रीहर्षः

Ans. (b) : 'दीपशिखा' यह उपाधि महाकवि कालिदास की है। यह उपाधि इन्दुमती स्वयंवर के दौरान कालिदास को दी गई थी। महाकवि माघ की उपाधि, 'घण्टामाघ', भारवि की उपाधि 'आतपत्र' एवं श्रीहर्ष की उपाधि उत्प्रेक्षा कवि के रूप में बहुप्रसिद्ध हैं।

Adda247
GET IT ON Google Play

40. **जटायुकथायाः आकरोऽस्ति-**

(a) कादम्बरी (b) बृहत्कथा
(c) कथाकौमुदी (d) रामायणम्

Ans. (d) : जटायुकथा का आकरग्रन्थ रामायण है। रामायण के अरण्यकाण्ड में जटायुकथा का वर्णन है। रामायण 7 काण्डों में विभक्त है। सीताहरण के समय जटायु ने सीता की सहायता करते हुए अपने प्राणों को गवायाँ था।

41. **मुद्रया परपक्षनिग्रहो जातः-**

(a) चाणक्यकृतौ (b) चन्द्रगुप्तराज्ये
(c) मुद्राराक्षसे (d) मयूरभट्टग्रन्थे

Ans. (c) : मुद्रया परपक्षनिग्रहो जातः इति मुद्राराक्षसे ।

42. **''यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः?'' इत्यत्र 'विधिना'- पदस्य अर्थोऽस्ति-**

(a) भाग्यम् (b) कर्मः
(c) ब्रह्मा (d) अर्थम्

Ans. (c) : ''यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः'' इस पंक्ति में 'विधिना' पद से 'ब्रह्मा' पद का आक्षेप किया गया है। यह सूक्ति भर्तृहरि प्रणीत 'नीतिशतकम्' से सम्बन्धित है।

43. **भीष्मस्य शरशय्यावर्णनं लभ्यते-**

(a) रामायणे (b) वेणीसंहारे
(c) पञ्चतन्त्रे (d) महाभारते

Ans. (d) : भीष्म के शरशय्या का वर्णन महाभारत में प्राप्त होता है। महाभारत 18 पर्वों में विभक्त विश्वसाहित्य का विशालतम् ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

44. **बाणभट्टविषये 'पञ्चबाणस्तु बाणः' इत्युक्तिमुक्तावान्-**

(a) गोवर्धनाचार्यः (b) जयदेवः
(c) धर्मदासः (d) बिल्हणः

Ans. (b) : बाणभट्ट के विषय में 'पञ्चबाणस्तुबाणः' यह उक्ति जयदेव की है। जयदेव का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'गीतगोविन्द' है। इसी ग्रन्थ में उन्होंने बाण को 'पञ्चबाणस्तुबाणः' कहा है।

45. **''अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्'' सूक्तिरियमस्ति-**

(a) शिवराजविजये (b) किरातार्जुनीये
(c) उत्तररामचरिते (d) नीतिशतके

Ans. (d) : ''अबोधोपहताश्चन्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्'' अर्थात् अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया। यह सूक्ति भर्तृहरि के नीतिशतकम् से सम्बन्धित है। 'नीतिशतकम्' में कुल 11 पद्धतियाँ हैं।

46. **'पञ्चतन्त्रम्' इति रचनाऽस्ति-**

(a) आख्यायिका (b) औपदेशिक-जन्तुकथा
(c) उपन्यासः (d) लोककथा

Ans. (b) : विष्णुशर्मा रचित पञ्चतन्त्र औपदेशिक-जन्तुकथा है। पञ्चतन्त्र में पाँच तन्त्रों का वर्णन हैं। प्रत्येक तन्त्र में 1 मुख्य कथा एवं अन्य उपकथाएँ होती हैं।

47. **''हितं मनोहरि च दुर्लभ वचः'' इति सूक्तिरस्ति-**

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) कादम्बर्याम्
(c) शिवराजविजये (d) किरातार्जुनीये

Ans. (d) : 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य की है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त बृहत्त्रयी का महत्त्वपूर्ण काव्यग्रन्थ है। मल्लिनाथ ने इसके 18 सर्गों पर 'घण्टापथ' नामक टीका लिखी है।

48. **'मलयकेतुः' पात्रमस्ति-**

(a) वेणीसंहारस्य (b) स्वप्नवासवदत्तस्य
(c) मालतीमाधवस्य (d) मुद्राराक्षसस्य

Ans. (d) : मलयकेतु विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षसम् का पात्र है। मुद्राराक्षस 7 अङ्कों का नाटकग्रन्थ है। इसमें चाणक्य की प्रतिज्ञा से लेकर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को राजा बनाने एवं राक्षस को अमात्य पद स्वीकारने तक का वर्णन है।

49. **कीदृशं जनं ब्रह्मापि न रञ्जयति?**

(a) अज्ञम् (b) विशेषज्ञम्
(c) ज्ञानलवदुर्विदग्धम् (d) उपर्युक्तेषु न कमपि

Ans. (c) : 'ज्ञानलवदुर्विदग्धं जनं ब्रह्मापि न रञ्जयति' अर्थात् थोड़े ज्ञान के कारण विदग्ध व्यक्ति को ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते हैं। यह पंक्ति भर्तृहरि प्रणीत नीतिशतकम् से अवतरित है।

50. **''सतीव योषित्प्रकृतिश्च निश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' इति सुभाषितं प्रोक्तं वर्तते-**

(a) शिशुपालवधे (b) नैषधीयचरिते
(c) रामायणे (d) किरातार्जुनीये

Ans. (a) : ''सतीव योषित्प्रकृतिश्च निश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि'' यह सुभाषित पंक्ति शिशुपालवधम् महाकाव्य की है।

51. **'रामायणतिलकम्' इति नाम्न्याः टीकायाः प्रणेताऽस्ति-**

(a) अहोबलः (b) राजारामवर्मा
(c) माधवयोगी (d) वैद्यनाथदीक्षितः

Ans. (b) : ''रामायणतिलकम्'' नाम्न्याः टीकायाः प्रणेता राजारामवर्मा अस्ति।

52. **''क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते'' उक्तिरियमस्ति-**

(a) रघुवंशे (b) कुमारसम्भवे
(c) नैषधीयचरिते (d) शिशुपालवधे

Ans. (b) : ''क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते'' यह उक्ति कुमारसम्भवम् महाकाव्य की है। कालिदास विरचित कुमारसम्भवम् महाकाव्य 17 सर्गों में विभक्त लघुत्रयी का महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ है। 'क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते' यह सूक्ति कुमारसम्भवम् के 5 वें सर्ग से सम्बन्धित हैं।

Adda247

GET IT ON Google Play

53. ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'' सूक्तिरियं कस्मिन् काव्ये वर्तत?

(a) कुमारसम्भवे (b) मुद्राराक्षसे
(c) नैषधीयचरिते (d) रघुवंशे

Ans. (d) : ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः''। यह सूक्ति महाकवि कालिदास विरचित 'रघुवंशम्' महाकाव्य में प्राप्त है। रघुवशम् महाकाव्य 19 सर्गों में विभक्त हैं।

54. महाभारतस्य 'भारतभावदीपः' इति टीकायाः कर्ताऽस्ति-

(a) चतुर्भुजमिश्रः (b) नारायणसर्वज्ञः
(c) नीलकण्ठः (d) विमलबोधः

Ans. (c) : महाभारतस्य 'भारतभावदीपः' इति टीकायाः कर्ता नीलकण्ठः अस्ति। महाभारत पर कुल 36 टीकाएँ प्राप्त होती हैं। भारतभावदीप टीका के टीकाकार नीलकण्ठ चतुर्धर हैं।

55. ''विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।'' सूक्तिरियं वर्तते-

(a) शिशुपालवधे
(b) किरातार्जुनीये
(c) कुमारसम्भवे
(d) नैषधीयचरिते

Ans. (c) : विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः। यह सूक्ति 'कुमारसम्भवम्' में प्राप्त होती है। कालिदास विरचित कुमारसम्भव महाकाव्य 17 सर्गों में विभक्त हैं।

56. अधोलिखितकाव्येषु राजनीति-कूटनीति-विषयक काव्यमस्ति-

(a) नैषधीयचरितम् (b) कुमारसम्भवम्
(c) प्रतिमानाटकम् (d) मुद्राराक्षसम्

Ans. (d) : राजनीति-कूटनीति विषयकं मुद्राराक्षसम् काव्यमस्ति। विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षस एक कूटनीतिक नाटक है।

57. प्रतिमानाटकस्य रचयिता वर्तते-

(a) कालिदासः (b) महाकविः भासः
(c) मल्लिनाथः (d) विशाखदत्तः

Ans. (b) : प्रतिमानाटकस्य रचयिता महाकविः भासः वर्तते। महाकवि भास के 13 रूपकों में से प्रतिमानाटक सबसे बड़ा नाटक ग्रन्थ है। इसमें विदूषक का अभाव है।

58. कुमारसम्भवमहाकाव्ये कामदहनप्रसङ्गो वर्तते-

(a) द्वितीयसर्गे (b) तृतीयसर्गे
(c) चतुर्थसर्गे (d) पञ्चमसर्गे

Ans. (b) : कुमारसम्भवमहाकाव्ये कामदहनप्रसङ्गो तृतीयसर्गे वर्तते। कुमारसम्भवम् महाकाव्य के तृतीय सर्ग का नाम-मदन दहन है इसमें 76 श्लोक हैं।

59. ''सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे'' इति सूक्तिः वर्तते-

(a) कुमारसम्भवे (b) किरातार्जुनीये
(c) रघुवंशे (d) उत्तररामचरिते

Ans. (c) : 'सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे'। यह सूक्ति महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य की है। 'रघुवंशम्' महाकाव्यम् 19 सर्गों में विभक्त लघुत्रयी के अन्तर्गत आता हैं। जिसमें मनु और इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन हैं।

60. संस्कृतसुभाषितानां प्रसिद्धो ग्रन्थोऽस्ति

(a) चरकसंहिता (b) सुभाषितरत्नभाण्डागारम्
(c) सूक्तिपरिज्ञानम् (d) शुकनासोपदेशः

Ans. (b) : सुभाषितरत्नभाण्डागारम्' प्रसिद्धो ग्रन्थोऽस्ति। 'सुभाषितरत्नभाण्डागार' सबसे बड़ा तथा प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें 10,000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

61. 'कठोपनिषद्' सम्बद्धास्ति-

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans. (b) : 'कठोपनिषद्' यजुर्वेदेन सम्बद्धास्ति। यजुर्वेद की दो शाखाएँ प्राप्त होती है। कृष्णयजुर्वेद एवं शुक्लयजुर्वेद। इनमें से कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। कठोपनिषद् में नचिकेता और यम (यमराज) के मध्य हुए संवाद का वर्णन है।

62. ''सस्यमिव मर्त्यः पच्यते'' इति वचनं वर्तते-

(a) गीतायाम् (b) किरातार्जुनीये
(c) कठोपनिषदि (d) नीतिशतके

Ans. (c) : ''सस्यमिव मर्त्यः पच्यते'' सस्यमिवजायते पुनः'' यह सूक्ति कठोपनिषद् में प्राप्त होती है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। कठोपनिषद् में (2) अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभक्त हैं। इस प्रकार कठोपनिषद् में दो अध्याय तथा छह वल्ली हैं।

63. कठोपनिषदि नचिकेतसाः याचितो द्वितीयो वरः आसीत्-

(a) स्वपितृपरितोष
(b) आत्मज्ञानस्य प्राप्तिः
(c) स्वर्गसाधनभूतागा अग्निविद्यायां ज्ञानम्
(d) सांसारिक-सुखभोगप्राप्तिः

Ans. (c) कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता ने यम से द्वितीय वर के रूप में 'स्वर्ग की साधनभूत अग्निविद्या का ज्ञान' मांगा था। यम ने नचिकेता को तीन वर मांगने को कहा नचिकेता के द्वारा मांगे गये वर -- 1. पितृपरितोष 2. अग्निविद्या 3. आत्मा का ज्ञान।

64. 'विश्वजित्' नामक यज्ञे भवति-

(a) स्वदेहदानम् (b) सत्ताप्रदानम्
(c) सर्वस्वदानम् (d) धनप्रदानम्

Adda247
GET IT ON Google Play

Ans. (c) : 'विश्वजित्' नामकयज्ञे सर्वस्वदानम् भवति अर्थात् विश्वजित् नामक यज्ञ में यजमान द्वारा सर्वस्व दान का वर्णन कठोपनिषद् में प्राप्त होता है। इसमें नचिकेता के पिता महर्षि उद्दालक ने विश्वजित् नामक यज्ञ किया था। यज्ञ के उपरान्त महर्षि उद्दालक पुरोहितों को बूढ़ी एवं निरीन्द्रिय गायों का दान कर रहे थे। जिसको देखकर नचिकेता के मन में श्रद्धा का जन्म हुआ है।

65. गीतायाम् अध्यायानां सङ्ख्या अस्ति-

(a) द्वादश (b) एकादश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans. (d) : श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व से सम्बन्धित है। श्रीमद्भगवद्गीता में 18 (अट्ठारह) अध्याय है। महाभारत के युद्ध में किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन को भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश ही गीता है।

66. श्रीमद्भगवद्गीतायाः द्वितीयाध्यायस्य नामास्ति-

(a) विषादयोगः (b) साङ्ख्ययोगः
(c) ज्ञानविज्ञानयोगः (d) कर्मयोगः

Ans. (b) : 18 अध्यायों में विभक्त श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का अंशमात्र है। गीता के द्वितीय अध्याय का नाम-सांख्ययोग है। इसके 18 अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं-
1. अर्जुनविषादयोग 2. सांख्ययोग 3. कर्मयोग 4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग 5. कर्मसंन्यासयोग 6. आत्मसंयमयोग 7. ज्ञानविज्ञानयोग 8. अक्षरब्रह्मयोग 9. राजविद्याराजगुह्ययोग 10. विभूतियोग 11. विश्वरूपदर्शनयोग 12. भक्तियोग 13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञ विभागयोग 14. गुणत्रयविभागयोग 15. पुरुषोत्तमयोग 16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग 17. श्रद्धात्रयविभागयोग 18. मोक्षसंन्यासयोग।

67. 'समत्वस्य' शब्दार्थ एवास्ति-

(a) समतावादः
(b) समदर्शनम्
(c) समतायाः स्वभावः
(d) योगः

Ans. (b) : 'समत्वस्य' शब्दार्थ समदर्शनमस्ति।

68. स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं वर्णितमस्ति-

(a) कठोपनिषदि
(b) शुकनासोपदेशे
(c) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्
(d) किरातार्जुनीये

Ans. (c) : स्थितप्रज्ञ का लक्षण श्रीमद्भगवद्गीता में बताया गया है। अर्जुन द्वारा पूँछने पर–स्थितप्रज्ञस्य का भाषा? भगवान् श्रीकृष्ण उत्तर देते हैं कि- हे पार्थ! दुःख भोगते हुए भी जिसके मन में उद्वेग नहीं होता और न ही जो सुख की लालसा रखता है तथा जिसके हृदय में क्रोध मोहादि विकारों के लिए कोई स्थान नहीं होता। वह मनुष्य स्थिति प्रज्ञ है।

69. 'एवमुक्त्वा हृषीकेशो गुडाकेश' इत्यत्र गुडाकेश-शब्दस्यार्थः अस्ति-

(a) पराक्रमेशः (b) कामेशः
(c) वैभवेशः (d) इन्द्रियेशः

Ans. (d) : एवमुक्त्वा हृषीकेशो गुडाकेश परन्तपः। प्रश्नानुसार गुडाकेश का अर्थ-इन्द्रियेशः है। गुडाकेश अर्जुन को कहा गया है। गुडाकेश का शाब्दिक अर्थ है --निद्रा को जीतने वाला।

70. 'न जाये म्रियते वा कदाचिदि' ति कथनां कस्य कृते वर्तते?

(a) मनुष्यस्य कृते (b) देवस्य कृते
(c) आत्मनः कृते (d) संसारस्य कृते

Ans. (c) :

''न जायते म्रियते वा कदाचिद्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यं शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

इस श्लोक में आत्मा के विषय में वर्णन किया गया है।

71. किरातार्जुनीयस्य उपजीव्यमस्ति-

(a) रामायणम् (b) महाभारतम्
(c) शिवपुराणम् (d) भागवतम्

Ans. (b) : किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का उपजीव्य महाभारत है। महाभारत के वनपर्व में किरातार्जुनीयम् की कथा मिलती है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य महाकवि भारवि का 18 अध्यायों में विभक्त बृहत्रयी का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका नायक मध्यमपाण्डव अर्जुन तथा प्रतिनायक भगवानशंकर हैं।

72. ''.....रामस्य करुणो रसः'' इति कथनमस्ति-

(a) मुरलायाः (b) सीतायाः
(c) तमसायाः (d) वासन्त्याः

Ans. (a) : 'रामस्य करुणो रसः' यह कथन मुरला का है। सम्पूर्ण श्लोक इस प्रकार है -

'अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढ घनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥''

यह श्लोक महाकवि भवभूति कृत उत्तररामचरितम् से सम्बन्धित है। उत्तररामचरितम् भवभूति का 7 अङ्कों में विभक्त महत्त्वपूर्ण नाटक ग्रन्थ है।

73. उत्तररामचरितस्य तृतीयाङ्कस्य नामास्ति-

(a) सम्मेलनम् (b) पञ्चवटीप्रवेशः
(c) चित्रदर्शनम् (d) छायाङ्क :

Ans. (d) : भवभूति कृत उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क का नाम छायाङ्क है। उत्तररामचरितम् में 7 अङ्क है। इसके सातों अङ्कों के नाम इस प्रकार है - (1) चित्रदर्शन (2) पञ्चवटीप्रवेश (3) छायाङ्क (4) कौशल्याजनक योग (5) कुमारविक्रम (6) कुमारप्रत्यभिज्ञान (7) सम्मेलन या गर्भाङ्क।

Adda247
GET IT ON Google Play

74. 'श्रीविशाला पुरी' वर्तते-

(a) उज्ञयिनी (b) पुरी
(c) देवपुरी (d) मुम्बापुरी

Ans. (a) : श्रीविशाला पुरी का वर्णन 'मेघदूतम्' में प्राप्त होता है। श्रीविशाला पुरी को उज्जयिनी नगरी के नाम से जाना जाता है। महाकवि कालिदास प्रणीत 'मेघदूतम्' नामक खण्डकाव्य में उज्जयिनी नगरी का वर्णन है जो कि धन-धान्य से युक्त है।

75. 'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः' भवति-

(a) हिमालयः (b) मेघः
(c) लतागुल्मः (d) वर्षाकालः

Ans. (b) : 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः' भवति अर्थात् धूम (धुँआ) ज्योति (प्रकाश) सलिल (जल) मरुत (हवा) के सम्मिश्रण से मेघ का निर्माण होता है। इसका वर्णन कालिदास प्रणीत मेघदूतम् खण्डकाव्य में है। इसमें मेघ को दौत्य कर्म करते हुए दिखाया गया है।

76. 'दुरोदर'-शब्दस्यार्थोऽस्ति-

(a) दर्दुरः (b) भूधरः
(c) श्रीधरः (d) द्यूतम्

Ans. (d) : 'दुरोदर' शब्द का अर्थ द्यूतम् (जुआँ) है। दुरोदर शब्द का प्रयोग किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किया गया है। किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि का 18 सर्गों में विभक्त महाकाव्य ग्रन्थ है।

77. वनेचरः युधिष्ठिरं कुत्र अमिलत्?

(a) श्रीखण्डे (b) धर्मक्षेत्रे
(c) वराहवने (d) द्वैतवने

Ans. (d) : वनेचरः युधिष्ठिरं द्वैतवने अमिलत् । युधिष्ठिर द्वारा प्रेषित ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर राजा दुर्योधन की राज्यविषयक जानकारी प्राप्त करके महाराज युधिष्ठिर से बताने के लिए उनको द्वैतनामक वन में मिलता है। इसको इस श्लोक के माध्यम से जाना जा सकता है-

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालिनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम् ।
स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥

78. प्रियंवदानसूये सख्यौ आस्ताम्-

(a) शकुन्तलायाः (b) मेनकायाः
(c) विशाखायाः (d) गौतम्याः

Ans. (a) : महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् विश्वसाहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक ग्रन्थ है जो 7 अङ्कों में विभक्त है। इस नाटक ग्रन्थ में अनसूया और प्रियंवदा नामक दो तपोवन की शिष्याएँ शकुन्तला की सखी के रूप में चित्रित की गई है।

79. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' इत्यस्मिन् पदे 'अस्य' पदं प्रयुक्तमस्ति-

(a) सुयोधनाय (b) युधिष्ठिराय
(c) धृतराष्ट्राय (d) वायुदेवाय

Ans. (a) :'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' इस पंक्ति में प्रयुक्त 'अस्य' पद सुयोधन के लिए प्रयुक्त है। वनेचर द्वैतवन में महाराज युधिष्ठिर से बताता है कि दुर्योधन के अनुराग के कारण उसके त्रिगण (धर्म-अर्थ-काम) आपस में बैर नहीं करते हैं।

80. मेघदूते प्रयुक्तस्य छन्दसो नामास्ति-

(a) अनुष्टुप् (b) वसन्ततिलका
(c) मन्दाक्रान्ता (d) स्रग्धरा

Ans. (c) : महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध खण्डकाव्य मेघदूतम् है। सम्पूर्ण मेघदूतम् में मन्दाक्रान्ता छन्द प्रयुक्त है। मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण इस प्रकार है ---- "मन्दाक्रान्ता जलधि षड्गैर्म्भौ नतौ ताद्गुरू चेत्।"

81. मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति-

(a) विन्ध्याचलः (b) श्रीशैलः
(c) चित्रकूटम् (d) रामगिर्याश्रमः

Ans. (d) : 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इस पंक्ति से रामगिरि आश्रम का परिचय प्राप्त हो रहा है। सम्पूर्ण श्लोक इस प्रकार है -

"कश्चिद्कान्ता विरह गुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्ष भोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥

82. शिवराजविजये गौरसिंहः आसीत्-

(a) अष्टादशवर्षीयः (b) षोडशवर्षीयः
(c) विंशतिवर्षीयः (d) पञ्चविंशतिवर्षीयः

Ans. (b) : शिवराजविजये गौरसिंहः षोडशवर्षीयः युवकः आसीत् । अर्थात् शिवराजविजय के अनुसार गौरसिंह सोलह (16) वर्षीय युवक था। शिवराजविजय पं० अम्बिकादत्त व्यास का एक ऐतिहासिक उपन्यास ग्रन्थ है।

83. शिवराजविजयस्य मङ्गलाचरणम् उद्धृतमस्ति-

(a) रामायणात् (b) भागवतात्
(c) महाभारतात् (d) पञ्चतन्त्रात्

Ans. (b) : शिवराजविजय का मङ्गलाचरण भागवत् पुराण से उद्धृत है। "विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् "।

84. करुणोऽङ्गीरसोऽस्ति-

(a) उत्तररामचरिते
(b) रत्नावल्याम्
(c) मृच्छकटिके
(d) अभिज्ञानशाकुन्तले

Adda247 | GET IT ON Google Play

Ans. (a) : दिये गए विकल्पों में से भवभूति कृत उत्तररामचरितम् करुण रस प्रधान नाटक है। उत्तररामचरितम् 7 अङ्कों में विभक्त छायाङ्क प्रधान नाटक है।

85. 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी' इति वचनमस्ति-

(a) रामायणे (b) उत्तररामचरिते
(c) रघुवंशे (d) नीतिशतके

Ans. (b) : 'विरहव्यथेव वनमेति जानकी' यह वाक्यांश उत्तररामचरितम् से लिया गया है। उत्तररामचरितम् भवभूति का 7 अङ्कों में विभक्त सर्वोत्कृष्ट नाटक है। भवभूति के नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके नाटकों में विदूषक का सर्वथा अभाव है।

86. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य उपजीव्यमस्ति-

(a) महाभारतम् (b) शिवपुराणम्
(c) अग्निपुराणम् (d) रामायणम्

Ans. (a) : अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य महाभारत है। महाभारत के आदिपर्व में शाकुन्तलम् की कथा का वर्णन है। महाभारत महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास की रचना है जो कि 18 पर्वों में विभक्त है।

87. 'वक्रः पन्था यदपि ' इत्यनेन का नगरी ज्ञाता भवति?

(a) अलकापुरी (b) उज्ञयिनी
(c) विदिशा (d) अयोध्या

Ans. (b) : 'वक्रः पन्था यदपि' इस पंक्ति से उज्जयिनी नगरी का बोध होता है। यह पंक्ति मेघदूतम् के पूर्वार्द्ध भाग से सम्बन्धित है। मेघदूतम् महाकवि कालिदास का खण्डकाव्य है जो मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध है।

88. ''दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता'' इति कथनमस्ति-

(a) कण्वस्य (b) शार्ङ्गरवस्य
(c) दुष्यन्तस्य (d) प्रियंवदायाः

Ans. (d) : 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता' यह कथन प्रियंवदा का है। यह गद्यांश अभिज्ञानशाकुन्तलम् का है। जिसमें प्रियंवदा अनसूया को शकुन्तला के विषय में बताती हुई कहती है। वस्तुतः यह कथन कण्व का है किन्तु रंगमंच के द्वारा प्रियंवदा अभिनेय है इसलिए इसका वक्ता प्रियंवदा को माना जाता है।

89. नीतिशतकस्य रचयिता अस्ति-

(a) कालिदासः (b) बिल्हणः
(c) भर्तृहरिः (d) अम्बिकादत्तव्यासः

Ans. (c) : नीतिशतकस्य रचयिता भर्तृहरिः अस्ति। भर्तृहरि की मुख्यतः 4 रचनाएं प्राप्त होती हैं -
(1) शृंगारशतकम्
(2) नीतिशतकम्
(3) वैराग्यशतकम्
(4) वाक्यपदीयम्
➢ इनमें से वाक्यपदीय व्याकरणिक ग्रन्थ है जिसमें तीन काण्ड है।

90. 'अद्य हि वेदा विच्छिद्य' इति 'विच्छिद्य' इत्यस्मिन् पदे को धातुः कश्च प्रत्ययः?

(a) 'छिद्'-धातुः ल्यप् - प्रत्ययः
(b) 'च्छिद्'- धातुः यत्-प्रत्ययः
(c) 'छिद्'- धातुः क्यप्- प्रत्ययः
(d) 'च्छिद्' - धातुः ण्यत्- प्रत्ययः

Ans. (a): विच्छिद्य में वि उपसर्ग पूर्वक छिद् धातु से ल्यप् प्रत्यय है। ल्यप् में य शेष बचता है अब वि+छिद् +य हुआ। 'छे च' सूत्र से तुक् (त्) का आगम होकर वि + त् छिद् + य बना अब 'स्तोः श्चुनाश्चुः सूत्र से त् को च् होकर वि+च् छिद् + य हुआ वर्ण सम्मेलन करने पर विच्छिद्य बना।

91. शिवराजविजये 'वीरतासीमन्तिनीसीमन्तसुन्दरसान्द्रसिन्दूर-दानदेदीप्यमानदोर्दण्डः' कः?

(a) गौरसिंहः (b) योगिराजः
(c) शिववीरः (d) श्यामसिंहः

Ans.(c):''वीरतासीमन्तिनीसीमन्तसुन्दरसान्द्रसिन्दूर दानदेदीप्यमानदोर्दण्डः'' यह विशेषण शिववीरः अर्थात् शिवाजी का है। यह गद्यांश पं. अम्बिकादत्तव्यास रचित शिवराजविजय से सम्बन्धित है।

92. शिवराजविजये 'अवलम्बो रोलकदम्बस्य' कः?

(a) चन्द्रमाः (b) नक्षत्राणि
(c) सूर्यः (d) आकाशः

Ans. (c) : शिवराजविजये अवलम्बो रोलकदम्बस्य सूर्यः अस्ति। शिवराजविजय का प्रारम्भ ही प्रातःकाल से होता है। प्रथम गद्यांश में भगवान् सूर्य की वन्दना की गई है।

93. ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' इत्युक्तिरस्ति-

(a) तमसायाः (b) मुरलायाः
(c) वासन्त्याः (d) सीतायाः

Ans. (b) : ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः'' यह उक्ति मुरला की है। मुरला और तमसा दो अधिष्ठात्री नदियाँ है जिनका वर्णन भवभूति कृत उत्तररामचरितम् में मिलता है। मुरला तमसा से कहती है कि राम सीता जैसे लोगों का परिणाम (दुरावस्था) भी अद्भुत को उत्पन्न करने वाला होता है। क्योंकि पृथ्वी और भागीरथी ऐसे लोगों के सहायक हैं।

94. ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तःस्नेहस्य'' इति कथनमास्ति-

(a) रामस्य (b) वासन्त्याः
(c) तमसायाः (d) सीतायाः

Ans. (c) : ''प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य'' यह कथन तमसा का है। तमसा भगवती सीता से कहती है कि - सन्तान वस्तुतः स्नेह की चरम सीमा होती हैं। तथा सन्तान माता-पिता को आपस में जोड़ने वाली कड़ी है।

Adda247
GET IT ON Google Play

95. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न'' इति पद्ये 'चारचक्षुषः' इत्यस्मिन् पदे समासोऽस्ति-
(a) द्विगुः (b) बहुव्रीहिः
(c) अव्ययीभावः (d) तत्पुरुषः

Ans. (b) : ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः''।।
इस पंक्ति में प्रयुक्त चारचक्षुषः पद में बहुव्रीहि समास है। इसका विग्रह होगा-चाराः चक्षूंषि येषां ते चारचक्षुषः।

96. मेघदूते विन्ध्याचलतले प्रसृता का नदी वर्णिता?
(a) रेवा (b) चर्मण्वती
(c) शिप्रा (d) गन्धवतः

Ans. (a) : 'मेघदूतम्' के अनुसार, विन्ध्याचल की तलहटी में फैली हुई नदी का नाम रेवा (नर्मदा) है। 'मेघदूतम्' में सबसे पहले रामगिरि पर्वत का उल्लेख है तथा सबसे पहला प्रदेश मालदेश है।

97. क्रोधावेगग्राहाणाम् उत्पत्तिनिम्नगा का?
(a) लक्ष्मीः (b) रागाकुलता
(c) मोहाकुलता (d) ईर्ष्याकुलता

Ans. (a) : क्रोधावेगग्राहाणाम् उत्पत्तिनिम्नगा लक्ष्मीः अस्ति। यह वाक्यांश कादम्बरी के शुकनासोपदेश का है। शुकनासोपदेश में युवराज चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के समय मन्त्री शुकनास के द्वारा लक्ष्मी एवं यौवन के विषय में जो सारगर्भित उपदेश दिया गया है। उसी का वर्णन इस पुस्तक में प्राप्त होता है।

98. किरातार्जुनीये सर्गाः सन्ति-
(a) षोडश (b) अष्टादश
(c) एकोनविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

Ans. (b) : भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य बृहत्त्रयी का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में वनेचर युधिष्ठिर प्रसंग एवं द्रौपदी-युधिष्ठिर वार्तालाप का वर्णन है।

99. कादम्बर्यां शुकनासः किमुपदिशति स्म?
(a) रामम् (b) श्रीकृष्णम्
(c) चन्द्रापीडम् (d) त्रियु किमपि न

Ans. (c) : कादम्बर्यां शुकनासः चन्द्रापीडमुपदिशति स्म। अर्थात् कादम्बरी के शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास के द्वारा चन्द्रापीड को उपदेश दिया गया है।

100 . 'विशङ्कमानो भवतः पराभवम्' इति 'विशङ्कमान' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति-
(a) यत् (b) क्तः
(c) ल्युट् (d) शानच्

Ans. (d) : 'विशङ्कमानो भवतः पराभवम्' इस पंक्ति में प्रयुक्त 'विशङ्कमानः = वि+शङ्क + शानच्' पद में शानच् प्रत्यय है।
'विशङ्कमानो भवतः पराभवम्' यह पंक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग से सम्बन्धित है। किरातार्जुनीयम् 18 सर्गों का भारवि कृत महाकाव्य है।

101. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अन्तिमश्लोके छन्दोऽस्ति-
(a) वंशस्थम् (b) उपजातिः
(c) मालिनी (d) इन्द्रवज्रा

Ans. (c) : 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के अन्तिम श्लोक में मालिनी छन्द है। मालिनी छन्द में 15 वर्ण होते हैं। मालिनी छन्द का लक्षण इस प्रकार है-
''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।''

102. ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'' इति कथनमस्ति-
(a) गौतम्याः (b) प्रियंवदायाः
(c) अनसूयायाः (d) शार्ङ्गरवस्य

Ans. (b) : ''को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति'' अर्थात् नवमालिका (चमेली) को भला कौन गर्म जल से सींचेगा। यह कथन प्रियंवदा का है। यह कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् से सम्बन्धित है। शाकुन्तलम् महाकवि कालिदास का 7 अङ्कों का प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है।

103. अभिज्ञानशाकुन्तले चतुर्थाङ्के 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इत्यत्र अलङ्कारोऽस्ति-
(a) उपमा (b) रूपकम्
(c) अतिशयोक्तिः (d) उत्प्रेक्षा

Ans. (d) : अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रयुक्त 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इस पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है। उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा इस प्रकार है-
सम्भावनामथोत्प्रेक्षाप्रकृतस्यसमेनयत्।

104. नीतिशतकानुसारेण 'नृणां वृद्धौ क्षये न किम् एकमेव कारणं' भवति-
(a) धनम् (b) दैवम्
(c) सामर्थ्यम् (d) साधनम्

Ans. (b) : नीतिशतकानुसारेण नृणां वृद्धौ क्षये च दैवम् एकमेव कारणम् अस्ति। अर्थात् नीतिशतकम् के अनुसार राजाओं की वृद्धि और क्षय का एकमात्र कारण दैव ही है। यह श्लोकांश नीतिशतकम् के दैव पद्धति से लिया गया है।

105. ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्भिन्नः'' इत्युक्तिरस्ति-
(a) सीतायाः
(b) तमसायाः
(c) वासन्त्याः
(d) मुरलायाः

Ans. (b) : ''एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्भिन्नः'' यह उक्ति तमसा की है। भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' 7 अंकों का नाटक है। यह उक्ति 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक की है। भवभूति एकमात्र करुण रस ही मानते हैं।

106. माहेश्वरसूत्रेषु कस्य वर्णस्य वारद्वयं पाठो जातः?
(a) स् - वर्णस्य
(b) ह् - वर्णस्य
(c) श् - वर्णस्य
(d) म् - वर्णस्य

Ans. (b) : माहेश्वर सूत्रों में 'ह्' वर्ण दो बार पढ़ा जाता है। प्रथम बार 'हयवरट्' में तथा द्वितीय 'हल्' में। माहेश्वर सूत्रों की संख्या (14) है- (1) अइउण् (2) ऋलृक् (3) एओङ् (4) ऐऔच् (5) हयवरट् (6) लण् (7) ञमङणनम् (8) झभञ् (9) घढधष् (10) जबगडदश् (11) खफछठथचटतव् (12) कपय् (13) शषसर् (14) हल् ।।

107. कस्मिन् प्रत्याहारे सर्वे व्यञ्जनवर्णाः समाविष्टा भवन्ति?
(a) अण्प्रत्याहारे (b) हल्प्रत्याहारे
(c) अट्प्रत्याहारे (d) हश्प्रत्याहारे

Ans. (b) : हल् प्रत्याहारान्तर्गते सर्वे व्यञ्जनवर्णाः समाविष्टा भवन्ति। हल् प्रत्याहार के अन्तर्गत सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आ जाते हैं। महर्षि पाणिनि के अनुसार प्रत्याहारों की संख्या 14 है।

108. 'र' प्रत्याहारे वर्णो स्तः-
(a) ह् र् (b) र् ल्
(c) अ आ (d) ध् ट्

Ans. (b) : 'र' प्रत्याहार के अन्तर्गत र् और ल् वर्ण आते हैं। 'र' प्रत्याहार को मिलाकर प्रत्याहारों की संख्या 43 मानी गयी है।

109. 'अनुदितम्' इति पदे समासोऽस्ति-
(a) द्विगुः (b) द्वन्द्वः
(c) अव्ययीभावः (d) बहुव्रीहिः

Ans. (c) : 'अनुदितम्' पद में अव्ययीसमास है। अव्ययीभाव समास में प्रायः पूर्वपद प्रधान होता है। समास होने के बाद सम्पूर्ण पद अव्यय बन जाता है इसलिए इस समास को अव्ययीभाव समास कहते हैं।

110. 'दीर्घसक्थः' इति पदे समासोऽस्ति-
(a) द्वन्द्वः (b) कर्मधारयः
(c) बहुव्रीहिः (d) तत्पुरुषः

Ans. (c) :'दीर्घसक्थः' पद में बहुव्रीहि समास है। इसका लौकिक विग्रह-दीर्घे सक्थिनी यस्याः सा तथा अलौकिक विग्रह दीर्घ औ सक्थि औ होगा।

111. 'कटे आस्ते' इत्युदाहरणे 'कटे' इत्यत्र आधारोऽस्ति-
(a) औपश्लेषिकः (b) वैषयिकः
(c) अभिव्यापकः (d) उपर्युक्तेषु न कोऽपि

Ans. (a) : 'कटे आस्ते' औपश्लेषिक आधार का उदाहरण है। आधार तीन प्रकार के होते हैं-
(1) औपश्लेषिक – कटे आस्ते/स्थाल्यां पचति।
(2) वैषयिक – मोक्षे इच्छास्ति।
(3) अभिव्यापक –तिलेषु तैलम् /सर्वस्मिन् आत्मा ब्रह्म।

112. पररूपसन्धेः उदाहरणमस्ति-
(a) प्राच्छीति (b) उपैति
(c) उपैधते (d) प्रेजते

Ans. (d) : दिये गये विकल्पों में से पररूप सन्धि का उदाहरण प्रेजते है। पररूप सन्धि का सूत्र 'एङि पररूपम्' है।

113. 'कुम्भकारः' इति पद प्रत्ययो वर्तते-
(a) तृच्
(b) तव्यत्
(c) अण्
(d) ल्युट्

Ans. (c) : 'कुम्भकारः' पद में अण् प्रत्यय है। कुम्भकारः में उपपद तत्पुरुष समास है। इसका विग्रह होगा कुम्भं करोति इति कुम्भकारः। कुम्भ शब्द के उपपद रहते हुए कृ धातु से अण् प्रत्यय के लगने से कुम्भकारः पद की सिद्धि होती है।

114. 'अमी ईशाः' इति प्रयोगे सूत्रं प्रवर्तते-
(a) अकः सवर्णे दीर्घः
(b) इको यणचि
(c) एङि पररूपम्
(d) अदसो मात्

Ans. (d) : 'अमी ईशाः' इस प्रयोग में 'अदसो मात्' सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ है। 'अमी ईशाः' में 'अदसो मात्' सूत्र से अमी की प्रगृह्य संज्ञा हुई तथा 'प्लुतप्रगृह्याचिनित्यम्' सूत्र से प्रकृतिभाव होकर अमी ईशाः रूप बना।

115. 'हरेऽव' सन्धौ सूत्रं प्रयुक्तमस्ति-
(a) एङः पदान्तादति (b) एङि पररूपम्
(c) एचोऽयवायावः (d) अवङ् स्फोटायनस्य

Ans. (a) : 'हरेऽव' सन्धि में 'एङः पदान्तादति'सूत्र प्रयुक्त हुआ है।

116. 'निर्मक्षिकम्' इति शब्दे समासोऽस्ति
(a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः
(c) द्विगुः (d) कर्मधारयः

Ans. (a) : 'निर्मक्षिकम्' में अव्ययीभाव समास है। इसका लौकिक विग्रह मक्षिकाणाम् अभावः एवं अलौकिक विग्रह मक्षिका आम् निर् होगा। 'निर्मक्षिकम्' में समास विधायक सूत्र 'अव्ययं विभक्ति समीप 'समृद्धिवृध्द्यर्थाभावाययासम्प्रति'.... है। अव्ययीभाव समास प्रायः पूर्व पद प्रधान होता है।

117. को नाम समासः नित्यं नपुंसकलिङ्ग धारयति?
(a) अव्ययीभावः (b) द्वन्द्वः
(c) द्विगुः (d) बहुव्रीहिः

Ans. (a) : अव्ययीभाव समासः नित्यं नपुंसकलिङ्ग धारयति। प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः अर्थात् अव्ययीभाव समास नित्य नपुंसक लिङ्ग होता है। अव्ययीभाव समास में पूर्व पद की प्रधानता होती है। 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास की नपुंसकलिङ्ग संज्ञा हो जाती है।

118. 'अस्मद्'- शब्दस्य पञ्चमीविभक्तेः एकवचने रूपं भवति-
(a) अस्मत्
(b) अस्मात्
(c) मदीयात्
(d) मत्

Ans. (d) : 'अस्मद्' शब्द के पञ्चमी विभक्ति एकवचन का रूप मत् होता है। इसके सभी विभक्तियों एवं वचनों का रूप इस प्रकार हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् /मा	आवाम् /नौ	अस्मान् /नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्/मे	आवाभ्याम् /नौ	अस्मभ्यम् /नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम/मे	आवयोः/नौ	अस्माकम् /नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

119. स्वस्ति- योगे विभक्तिर्भवति-
(a) द्वितीया
(b) चतुर्थी
(c) पञ्चमी
(d) षष्ठी

Ans. (b) : स्वस्ति योगे चतुर्थी विभक्तिर्भवति। अर्थात् स्वस्ति के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। 'नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्च' सूत्र से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं तथा वषड् इन छः अव्ययो के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

120. 'येनाङ्गविकारः' इति सूत्रेण विद्ध्यति-
(a) अक्ष्णा काणः (b) अक्षि काणम्
(c) काणस्याक्षि (d) काणायाक्षि

Ans. (a) : अक्ष्णा काणः (आँख से अन्धा) यह उदाहरण येनाङ्गविकारः सूत्र से सिद्ध होता है। येनाङ्गविकारः = अंगी के जिस अंग में कोई विकार हो तो अंग मात्र में तृतीया विभक्ति होती है।
जैसे– अक्ष्णा काणः
कर्णेन बधिरः।